॥दोहा॥

जय जय जय जग पावनी, जयति देवसरि गंग । जय शिव जटा निवासिनी, अनुपम तुंग तरंग ॥

॥चौपाई॥

जय जय जननी हराना अघखानी । आनंद करनी गंगा महारानी ॥

जय भगीरथी सुरसरि माता । कलिमल मूल डालिनी विख्याता ॥

जय जय जहानु सुता अघ हनानी । भीष्म की माता जगा जननी ॥

धवल कमल दल मम तनु सजे । लखी शत शरद चंद्र छवि लजाई ॥ ४ ॥

वहां मकर विमल शुची सोहें । अमिया कलश कर लखी मन मोहें ॥

जदिता रत्ना कंचन आभूषण । हिय मणि हर, हरानितम दूषण ॥

जग पावनी त्रय ताप नासवनी । तरल तरंग तुंग मन भावनी ॥

जो गणपति अति पूज्य प्रधान । इहूं ते प्रथम गंगा अस्नाना ॥ ८ ॥

ब्रह्मा कमंडल वासिनी देवी । श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवि ॥

साथी सहस्त्र सागर सुत तरयो । गंगा सागर तीरथ धरयो ॥

अगम तरंग उठ्यो मन भवन । लखी तीरथ हरिद्वार सुहावन ॥

तीरथ राज प्रयाग अक्षैवेता । धरयो मातु पुनि काशी करवत ॥ १२ ॥

धनी धनी सुरसरि स्वर्ग की सीधी । तरनी अमिता पितु पड़ पिरही ॥

भागीरथी ताप कियो उपारा । दियो ब्रह्म तव सुरसरि धारा ॥

जब जग जननी चल्यो हहराई । शम्भु जाता महं रह्यो समाई ॥

वर्षा पर्यंत गंगा महारानी । रहीं शम्भू के जाता भुलानी ॥ १६ ॥

पुनि भागीरथी शम्भुहीं ध्यायो । तब इक बूंद जटा से पायो ॥

ताते मातु भें त्रय धारा । मृत्यु लोक, नाभा, अरु पाताराा ॥

गईं पाताल प्रभावती नामा । मन्दाकिनी गई गगन ललामा ॥

मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनी । कलिमल हरनी अगम जग पावनि ॥ २० ॥

धनि मइया तब महिमा भारी । धर्मं धुरी कलि कलुष कुठारी ॥

मातु प्रभवति धनि मंदाकिनी । धनि सुर सरित सकल भयनासिनी ॥

पन करत निर्मल गंगा जल । पावत मन इच्छित अनंत फल ॥

पुरव जन्म पुण्य जब जागत । तबहीं ध्यान गंगा महं लागत ॥ २४ ॥

जई पगु सुरसरी हेतु उठावही । तई जगि अश्वमेघ फल पावहि ॥

महा पतित जिन कहू न तारे । तिन तारे इक नाम तिहारे ॥

शत योजन हूं से जो ध्यावहिं । निशचाई विष्णु लोक पद पावहीं ॥

नाम भजत अगणित अघ नाशै । विमल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशे ॥ २८ ॥

जिमी धन मूल धर्म अरु दाना । धर्म मूल गंगाजल पाना ॥

तब गुन गुणन करत दुख भाजत । गृह गृह सम्पति सुमति विराजत ॥

गंगहि नेम सहित नित ध्यावत । दुर्जनहूं सज्जन पद पावत ॥

उद्दिहिन विद्या बल पावै । रोगी रोग मुक्त हवे जावै ॥ ३२ ॥

गंगा गंगा जो नर कहहीं । भूखा नंगा कभुहुह न रहहि ॥

निकसत ही मुख गंगा माई । श्रवण दाबी यम चलहिं पराई ॥

महं अघिन अधमन कहं तारे । भए नरका के बंद किवारें ॥

जो नर जपी गंग शत नामा । सकल सिद्धि पूरण ह्वै कामा ॥ ३६ ॥

सब सुख भोग परम पद पावहीं । आवागमन रहित ह्वै जावहीं ॥

धनि मइया सुरसरि सुख दैनि । धनि धनि तीरथ राज त्रिवेणी ॥

ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा । सुन्दरदास गंगा कर दासा ॥

जो यह पढ़े गंगा चालीसा । मिली भक्ति अविरल वागीसा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

नित नए सुख सम्पति लहैं, धरें गंगा का ध्यान । अंत समाई सुर पुर बसल, सदर बैठी विमान ॥

संवत भुत नभ्दिशी, राम जन्म दिन चैत्र । पूरण चालीसा किया, हरी भक्तन हित नेत्र ॥

॥ इति श्री गंगा चालीसा ॥